# भारत में सिक्के का इतिहास

**डॉ. मनीष कुमार सिंह**

पुरापाषाण–युग में जब मानव शिकारी जीवन व्यतीत कर रहा था, तब विनिमय की कोई आवश्यकता नहीं थी। लेकिन बाद में जब अधिशेष उत्पादन हुआ तब विनिमय की आवश्यकता हुई। आरम्भ में 'वस्तु विनिमय' ;ठंतजमत ैलेजमउद्ध की पद्धति प्रचलित हुई। परन्तु 'वस्तु विनिमय तभी सफल हो सकता है जब खरीदने व बेचने वाले दोनों व्यक्तियों को वस्तुओं की आवश्यकता हो। इसलिए किसी ऐसी वस्तु की आवश्यकता प्रतीत हुई जिसे सब स्वीकार करें। इस प्रकार मुद्राओं का आविष्कार हुआ।

सांस्कृतिक एवं धार्मिक इतिहास के निर्माण में भी सिक्कों की उपयोगिता है। गुप्तकालीन सिक्के बहुत कलात्मक हैं। इन सिक्कों से तत्कालीन जनता की साहित्य और कला में रूचि की झलक दृष्टिगोचर होती है। सिक्कों से राजाओं और जन–साधारण के रीति–रिवाज और धार्मिक विश्वासों पर भी प्रकाश पड़ता है। समुद्रगुप्त को वीणावादक रूप में सिक्के पर प्रस्तुत किया गया है।